मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता।

दुनियाँ के मजदूरो, एक हो।

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 41 | नवम्बर 1991 | 50 पैसे

— सोवियत सत्ता —

अक्टूबर क्रान्ति का चरम बिन्दु

1871 मे पूंजीवादी खून-खराबे के खिलाफ पेरिस में मजदूरों ने कम्यून की सृष्टि की थी। मन्त्री-एम पी-एम एल ए-जनरल-डी सी-एस पी-जज-जेलर वाले सरकारी तन्त्र को तहस-नहस करके मजदूरों ने सामाजिक जीवन के संचालन का काम अपने हाथों में लिया था। पुलिस-फौज भंग और आम मजदूर हथियारबन्द : इस आधार पर मजदूरों ने समता वाले नये खुशहाल समाज के निर्माण की राह पर कदम बढाये थे।

पेरिस कम्यून के गठन और संचालन में फ्रान्स के मजदूरों के साथ हंगरी, पोलैंड, रूस, इटली, जर्मनी के मजदूर भी अगुआ कतारों में थे। पूंजीवादी शक्तियां, सब देशों की सरकारें पेरिस कम्यून के खिलाफ एक हो गई थी। हजारों मजदूर पेरिस कम्यून की रक्षा के लिये बहादुरी से लड़ते हुये शहीद हुये थे। पूंजीवादी बर्बरता ने पेरिस कम्यून मिटा दी पर कम्यून दुनिया-भर के मजदूरों के लिये दमन-शोषण से मुक्ति की राह पर ज्योति-स्तम्भ बन गई।

1917-18 में रूस-जर्मनी-आस्ट्रिया-हंगरी में मजदूरों ने 1914 से जारी पूंजीवादी मार-काट के खिलाफ सोवियतें-वरकर्स काउंसिल्स बनाई थी। हथियारबन्द मजदूरों ने पूंजीवादी फौजों को चुनौती दी थी रूस में मजदूर पुलिस-फौज को भंग करके पेरिस कम्यून की तरह सामाजिक जीवन के संचालन को अपने हाथों में लेने में सफल हुये थे। जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी में पूंजीवादी फौजों ने मजदूरों के ऐसे ही प्रयास को कुचल दिया था।

रूस में बनी सोवियतें दुनियां भर के मजदूरों के लिये प्रकाश-स्तम्भ बनी। दुनिया भर की पूंजीवादी शक्तियां सोवियतों के खिलाफ लामबन्द हुई थी। चौदह देशों की फौजों ने सोवियतों पर हमला बोल दिया था। पर इस बार अन्य देशों के मजदूरों के सहयोग से रूसी मजदूर उन फौजी हमलों को विफल करने में सफल हुये थे।

जर्मनी आदि देशों में असफलता की वजह से वह क्रान्तिकारी लहर पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़-फेंकने में फेल हुई। ऊपर से रूस में पूंजीवादी फौजों के हमलों से मुकाबले के दौरान वे कदम भी उठे जिनकी वजह से शीघ्र ही सोवियतें बराये नाम के लिये सोवियतें रह गई थी। 1918 में ही रूस में नये सिरे से फौज और खुफिया पुलिस बनाने की कार्यवाही आरम्भ हो गई थी। मन्त्री जनरल-मैनेजर-जेलर का नया तन्त्र उभरा जिसका ताकतवर बनना और सोवियतों का कमजोर पड़ना एक ही सिक्के के दो पहलू थे। असली सोवियतें मर गई और फर्जी सोवियतों ने उनका स्थान ले लिया। हाल ही में रूस में जिन्हें दफनाया गया है वे नकली सोवियतें थी।

पेरिस कम्यून-सोवियतें-वरकर्स काउंसिल्स-मजदूर परिषदें- .. इन सब का एक ही अर्थ है : पुलिस-फौज भंग, आम मजदूर हथियारबन्द और मजदूरों द्वारा सामाजिक जीवन का संचालन। इसलिये दमन-शोषण में मुक्ति तथा खुशहाल जीवन की सृष्टि की राह के लिये सोवियतें प्रकाश स्तम्भ है।

नकली सोवियतों को रूसी मजदूरों द्वारा ठोकर मार देने की इस वेला में अक्टूबर-नवम्बर 1917 की असली सोवियतों और सोवियत सत्ता को याद करने का यह एक सुखद अवसर है। हां, इनकी कमजोरियों को पहचानना तथा उन्हें दूर करने के लिये आवश्यक कदम उठाना क्रान्तिकारी राह पर आगे बढने के लिये जरूरी है।

-0-

नागपुर में मजदूरों पर गोलीबारी

5 अक्टूबर को नागपुर अलायज एण्ड कास्टिंग फैक्ट्री में मजदूरों पर मैनेजमेन्ट के अधिकारियों ने गोलीबारी की। तीन मजदूर मारे गये और 37 घायल हुये। बाद में पुलिस कमिश्नर ने दावा किया कि गोलियाँ पुलिस ने चलाई थी। पूंजीवादी अखबारों ने इस खून-खराबे को मजदूरों के बीच एक झगड़े के तौर पेश करके इसका जिक्र मात्र किया। अधिकतर पूंजीवादी पार्टियाँ मामले पर चुप्पी साध गई। महाराष्ट्र तथा केन्द्र सरकार के लिये यह एक सामान्य बात रही।

2 अगस्त 90 को भी नागपुर अलायज के मजदूरों पर गोलीबारी हुई थी। उस बार रात के वक्त बस्ती में घुस कर पुलिस ने यह करम किया था।

नागपुर के कुछ मित्रों तथा जन, संग्राम" [अनुराधा गाँधी, भंडार मोहल्ला, ईन्दोरा, नागपुर-440004] व "चिंगारी" [शंकर, 3 बी/11 सहजीवन फ्लैट्स, शिवाजी नगर, नागपुर-440010] से प्राप्त जानकारी पूंजीवादी तौर-तरीकों की एक झलक दिखाती है। मजदूर आन्दोलन के लिये महत्वपूर्ण समझ कर घटनाक्रम को हम यहाँ कुछ विस्तार से दे रहे है।

कम वेतन पर ज्यादा काम के लिये नागपुर अलायज एण्ड कास्टिंग मैनेजमेन्ट ठेकेदारों के जरिये उड़िया मजदूरों से काम लेती है। जिन पूंजीवादी कानूनों से मजदूरों को कुछ सहुलियत हो सकती है उन पर इस फैक्ट्री में अमल नहीं किया जाता। न्यूनतम वेतन, अटेंडेंस कार्ड तक नहीं दिये जाते। बरसों से फैक्ट्री इन्सपेक्टर, लेबर इन्सपेक्टर इत्यादि किसी ने भी मनेजमेन्ट के खिलाफ कोई कारवाई नहीं की।

मई 90 में वेतन में एक पैसा भी बढाये बिना मैनेजमेन्ट ने मोल्डिंग डिपार्टमेन्ट के मजदूरों मे पच्चीस परसेन्ट प्रोडक्शन बढाने के लिये दबाव डालना शुरु किया। तंग आकर मोल्डिंग विभाग के चार सौ मजदूरों ने मामले पर विचार करने के लिये 11 जुलाई 90 को एक साइड मीटिंग रखी। गुण्डों को ले कर मैनेजमेन्ट अधिकारी व ठेकेदार मीटिंग में पहुँचे और मजदूरों को धमकाया। उसी रात गुन्डों ने कुछ मजदूरों से बुरी तरह मार-पीट की। थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई लेकिन पुलिस ने गुन्डों के खिलाफ कोई कारवाई नहीं की।

12 जुलाई को मैनेजमेन्ट ने प्रोडक्शन बढाने को तैयार होने पर ही गेट के अन्दर जाने देने की शर्त रखी। मजदूर डी एल सी से मिले। डी एल सी ने मैनेजमेन्ट को चर्चा के लिये बुलाया पर मैनेजमेन्ट ने इनकार कर दिया।

13 जुलाई को कम्पनी की जीप में चक्कर लगा रहे ठेकेदारों और गुन्डों ने मजदूरों से मार पीट की। थाने में इसकी रिपोर्ट दर्ज करवाई किन्तु पुलिस ने कोई कारवाई नहीं की।

14 जुलाई को मजदूरों ने पुलिस कमिश्नर को एक आवेदन दिया पर उस कोई कारवाई नहीं हुई। 18 जुलाई रात को पुलिस कुछ मजदूरों को गिरफ्तार करके ले गई। थाने में उनसे मिलने गये मजदूरों को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अफसर ने खुले-आम कहा कि मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को सबक सिखाने को कहा है। 19 जुलाई को गिरफ्तार मजदूरों अदालत में पेश किया गया जहाँ फैक्ट्री के परसनल मैनेजर भी बैठे थे। जज ने प्रत्येक मजदूर से तीस हजार रुपये की जमानत मांगी। कोई भी मजदूर तीस हजार रूपये की जमानत देने की स्थिति में नहीं था। अतः परसनल मैनेजर के कहने पर जज ने मजदूरों को जेल भेज दिया। जेल में बन्द मजदूरों से मैनेजिंग डायरेक्टर मिले और बोले कि यदि मजदूर प्रोडक्शन बढाने को तैयार होतो वे उन्हें जेल से छुड़ाने को तैयार हैं। 27 जुलाई को सेशन्स जज की अदालत से मजदूर जमानत पर छूटे।

पुलिस अत्याचार व गुन्डागर्दी के खिलाफ 21 जुलाई को पुनः मजदूर पुलिस कमिश्नर से मिले। साहब ने मजदूरों से दो टूक कह दिया कि यदि बढा हुआ काम नहीं करना है तो अपने देश वापस चले जाओ। 31 जुलाई को मजदूरों ने फिर पुलिस कमिश्नर को आवेदन दिया पर उन्हें कोई फायदा नहीं हुआ।

डी एल सी से बार-बार मिलने पर उन्होंने डिमाण्ड नोटिस पर बात-चीत के लिये 3 अगस्त को तारीख तय की।

(शेष अगले पेज में)

तालाबन्दी और उसका जबाब

[जगह की कमी की वजह से पिछले अंक में तालाबन्दी सम्बन्धी लेख पूरा नहीं आ सका था। तालाबन्दियों के जारी सिलसिले में के जी खोसला कम्प्रेसर में 11 सितम्बर से और केल्विनेटर में 2 अक्टुबर से की गई तालाबन्दियों के सन्दर्भ में लेख विशेष करके लिखा गया था। जगह की कमी की वजह से ही केल्विनेटर आदि सम्बन्धी सामग्री भी पिछले अंक में नहीं छप सकी थी। इधर फरीदाबाद में ही स्थित एलसन काटन में 18 अक्टुबर से तालाबन्दी कर दी गई है। अतः पिछले अंक में छपे कुछ हिस्से को दोहराते हुये हम लेख का शेष भाग यहाँ छाप रहे है।]

किसी फैक्ट्री में तालाबन्दी की स्थिति में उस फैक्ट्री के मजदूरों को-

1. सब शिफ्टों के मजदूरों को हर रोज फैक्ट्री गेट पर अथवा अन्य किसी स्थान पर एक समय पर एकत्र होना चाहिये।

2. तालाबन्दी के खिलाफ पहले दिन से ही हर रोज जलूस निकालने चाहियें।

3. पांच-सात रोज लगातार जलूस के बाद अपने परिवार के सदस्यों के साथ जलूस निकालना चाहिये। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को जलूसों में शामिल करने की कोशिशें करनी चाहियें :

4. पर्याप्त ताकत एकत्र होने के पश्चात—

जलूसों में यह दीखने लगेगी पूंजीवादी तन्त्र के नाजुक अंगों (रेलवे, रोड, डीसी—एस पी दफ्तर) को जाम करने जैसे कदम उठाने चाहिये।

5. धारा 144 आदि के लागू होने पर पचास-पचास, सौ-सौ के जत्थों में हर रोज इन पूंजीवादी कानूनों को तोड़ कर गिरफ्तारी देनी चाहिये।

6. "एक पर हमला, सब पर हमला" की पुरानी सीख के अनुसार लाकआउट फैक्ट्री के मजदूरों के समर्थन में आम हड़ताल की कोशिश करनी चाहिये।

इस या उस आश्वासन पर कदम उठाने में देरी करना मजदूरों की ताकत बिखरने की राह है। बिचौलिये यह काम बहुत करते हैं। साइड मीटिंगों में, जनरल बाडी मीटिंगों में खुले विचार-विमर्श द्वारा कदम तय करना और संघर्ष की बागडोर अपने हाथों में रख कर ही रंग-बिरंगे बिचौलियों से मजदूर निपट सकते हैं।

यह अच्छी तरह समझने की जरूरत है कि फैलता और तीखा होता संघर्ष ही तालाबन्दी की सही काट है।

और, तालाबन्दी आदि पूंजीवादी बीमारियों का मुकम्मल इलाज तो पूंजीवादी व्यवस्था को दफनाने में ही है।

-X-

केल्विनेटर में फिर तालाबन्दी

मैनेजमेन्ट द्वारा 56 दिन की तालाबन्दी के बाद 18 जुलाई को फैक्ट्री खोलते ही यह स्पष्ट हो गया कि मैनेजमेन्ट ने हिसाब गलत लगाया था। मजदूर कुछ झुके अवश्य थे पर टूटे नहीं थे। समय के साथ केल्विनेटर मजदूरों की एकता, उससे भी अधिक उनके हौसले बढ़े और मजदूरों ने मैनेजमेन्ट की नाक में दम कर दिया। नतीजतन चीफ एग्जेक्युटिव अफसर की छुट्टी हुई और उसकी जगह मारुति से नये साहब लाये गये।

1989 से उमड़-घुमड़ रहे केल्विनेटर मजदूरों के असन्तोष की जड़ में कम वेतन और अधिक वर्क लोड है।

इसलिये बिना वर्क लोड में कोई वृद्धि किये वेतन में बड़ी वृद्धि की तीव्र इच्छा केल्विनेटर मजदूरों में है। अतः असल मामला अन्दर की अथवा बाहर की यूनियन का नहीं है। बुनियादी मुद्दा इस या उस व्यक्ति को लीडर मानने का भी नहीं है।

यह इसीलिये है कि मैनेजमेन्ट के लिये मजदूरों को कुचलना जरूरी हो गया है। नये साहब ने आते ही इसके लिये कदम उठाये हैं। सितम्बर की वेतन से पहले मजदूरों को उकसाने में मैनेजमेन्ट कामयाब हुई। एक अक्टुबर से की गई तालाबन्दी 7 सितम्बर से हुई हो गयी है। मैनेजमेन्ट ने इस बार सोच-समझ कर आर-पार की लड़ाई के लिये तालाबन्दी की है।

यह केल्विनेटर मजदूरों की नासमझी है कि भड़काने में आकर उन्होंने मैनेजमेन्ट को बेमौके ताला-बन्दी का मौका दिया - इसका कारण केल्विनेटर मजदूरों में सचेत एकता की बजाय अन्धी एकता का बोलबाला होना है।

तालाबन्दी के बाद की घटनाओं से लगता है कि मजदूरों ने पिछली तालाबन्दी के दौरान लगी ठोकरों सबक नहीं लिये हैं। समय की बरबादी और बिचौलियों पर आस फिर देखने को मिल रही हैं। मैनेज-मेन्ट के इस हमले का मुकाबला केल्विनेटर मजदूर अन्धी एकता से नहीं कर पायेंगे। मजदूरों को हालात की गम्भीरता समझनी चाहिये। लीडरों पर निर्भरता की बजाय सब मजदूरों का सक्रिय होना जरूरी है। इसी अंक में हमारे "तालाबन्दी और उसका जवाब" लेख पर विचार करें। आपसी विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

(यह सामग्री हमने पिछले अंक के लिये तैयार की थी। जगह की कमी की वजह से यह उस अंक में छप नहीं सकी थी और कुछ फोटो-स्टेट प्रतियाँ ही हम सरक्युलेट कर पाये थे। तालाबन्दी के महीने-भर बाद भी हम लेख को ज्यों का त्यों छाप रहे हैं क्योंकि न तो केल्विनेटर मजदूरों ने इस बीच कोई उल्लेखनीय कदम उठाया है और न ही हमारे पास नया कुछ कहने को है।)

-0-

संघर्ष......संघर्ष

तमिलनाडु में कोयम्बेटूर स्थित कपड़ा मिलों के 70 हजार मजदूरों ने पिछली साल 35 परसैन्ट तक मिले बोनस में बढ़ोतरी के लिये 22 अक्टूबर से हड़ताल शुरु की हुई है।

मध्य प्रदेश के भिलाई क्षेत्र में शंकर गुहा नियोगी के हत्यारों की गिरफ्तारी और सिम्पलैक्स आदि के हड़ताली मजदूरों की माँगें मनवाने के लिये संघर्ष जारी है।

पंजाब में अबोहर स्थित भवानी काटन मिल्स में अधिक बोनस के लिये संघर्ष कर रहे मजदूरों पर 26 अक्टूबर को पुलिस ने गोलीबारी की जिसमें 6 मजदूर मारे गये।

-X-

छँटनी......छँटनी

फरीदाबाद में के. जी. खोसला कम्प्रेसर में काम कर रहे ढाई हजार मजदूरों में से बारह सौ मजदूरों को निकालने के लिये मैनेजमेन्ट ने 12 सितम्बर से फैक्ट्री में तालाबन्दी की हुई है।

फरीदाबाद में ही स्थित एलसन काटन मिल्स में मैनेजमेन्ट ने 18 अक्टूबर से तालाबन्दी कर दी है एलसन में 1500 मजदूर काम करते हैं जिनमें से 500 कैजुअल और डेढ सौ ठेकेदारों के वरकर हैं। आटो-मेशन की प्रक्रिया इस फैक्ट्री में चल रही है। इसके चलते फालतू होने वाले मजदूरों को निकालने के लिये ही डिमान्ड नोटिस की आड़ में मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में तालाबन्दी की है।

रेलवे में पच्चीस लाख लोग काम करते हैं। एक सरकारी कमेटी ने 1995 तक रेलवे में चालीस प्रतिशत कर्मचारी कम करने की सिफारिश की है। केन्द्र सरकार इस रिपोर्ट पर विचार कर रही है।

-X-

नागपुर में मजदूरों पर गोलीबारी

(पेज १ का शेष)

और 2 अगस्त की रात को उड़ीसा से नये मजदूरों की खेप लेकर ठेकेदार पहुँचे। फैक्ट्री से बाहर कर रखे मजदूरों को जब इसका पता चला तो उन्होंने नये मजदूरों से सम्पर्क किया। हालात स्पष्ट होने के पश्चात नये लोग फैक्ट्री में जाने की बजाय बस्ती में रूक गये। और तब पुलिस व मैनेजमेन्ट ने बस्ती पर हमला बोला था।

मजदूर बस्ती में पुलिस फायरिंग के खिलाफ नागपुर में मजदूरों ने हड़ताल और जलूसों के जरिये अपने गुस्से और शक्ति का प्रदर्शन किया था। पूँजीवादी अखबारों ने फायरिंग में मजदूरों के मारे जाने आदि की खबरें छापी थी। काँग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं तक ने तब शोर मचाया था। महाराष्ट्र विधानसभा में इस मामले पर काफी बक-बक हुई और सरकार ने जाँच आयोग बना दिया। उस माहौल ने नागपुर अलायज मैनेजमेन्ट और पुलिस को कुछ पीछे हटने को मजबूर कर दिया था। उड़ीसा से नये लाये मजदूरों को वापस भेजना पड़ा और 25 परसैन्ट प्रोडक्शन बढाने की शर्त माने बिना मजदूरों को फैक्ट्री में डियूटी पर लेना पड़ा था।

नागपुर अलायज मैनेजमेन्ट और मजदूरों के बीच खींचा-तान जारी रही। दिसम्बर 90 में जनरल मैनेजर से हाथा-पाई के बहाने पुलिस से भारी दमन किया। 90 मजदूर गिरफ्तार किये गये और हिरासत में कइयों को यातनायें दी गई। इन्ड-स्ट्रीयल एरिया में विभिन्न स्थानों पर पुलिस चौकियाँ बना दी गई। पुलिस ने एरिया में जुलूसों पर पाबन्दी लगा दी, एरिया की फैक्ट्रियों में गेट मीटिंगों तक पर पुलिस ने रोक लगादी। नागपुर अलायज में तो फैक्ट्री के अन्दर पुलिस चौकी बना दी गई। मैनेज-मेन्टों की एसोसियेशन ने इन्डस्ट्रीयल एरिया में "शान्ति और व्यवस्था" स्थापित करने के लिये पुलिस कमिश्नर को बधाइयाँ दीं। मजदूर इन सब हरकतों का माकूल जवाब नहीं दे पाये।

इन परिस्थितियों में नागपुर अलायज मैनेजमेन्ट ने तीस मजदूरों को बर्खास्त कर दिया। अपने साथियों को नोकरी से निकाले जाने के खिलाफ मजदूरों ने 16 सितम्बर 91 से टूल डाउन स्ट्राइक की। 5 अक्टूबर वाली गोलीबारी मजदूरों के इस संघर्ष को दबाने के लिये की गई।

5 अक्टूबर के खून-खराबे के खिलाफ लगभग सम्पूर्ण पूँजीवादी धड़ा चुप्पी साध गया। मजदूरों का विरोध भी इस बार काफी कमजोर रहा। 5 अक्टूबर की फायरिंग के खिलाफ 8 अक्टूबर को इन्डस्ट्रीयल एरिया बन्द अवश्य रहा पर मजदूर बुझे-बुझे से थे। प्रतिरोध जलूस वाले दिन तो यह कमजोरी इतनी ज्यादा दिखी कि पुलिस ने जलूस में शामिल लोगों की खुलेआम वीडियो फिल्म बनाने की जुर्रत की।

लड़ने के लिये लड़ना समझदारी का काम नहीं है। हारने के लिये लड़ना तो बेवकूफी है। लड़ाई जीतने के लिये लड़ी जाती है। इसके लिये जरूरी है कि समुचित तैयारी की जाये। आज तेजी से बढ रहे पूँजीवादी हमलों से निपटने के लिये मजदूरों द्वारा शक्ति संचित करना जरूरी है इसके लिये कदमों पर गम्भीरता से विचार करना मजदूर आन्दोलन के विकास के लिये जरूरी है। छाती पीटने से कुछ नहीं होगा। हार को जीत देखना तो है ही बरबादी की राह।

-X-

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा 'मजदूरों तक पहुचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने क लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए उत्तरांचल प्रिन्टर्स, फरीदाबाद से मुद्रित